डॉ. नवीन नन्दवाना
हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

ढोला मारू रा दूहा

मारवणी का संदेश - 110

नरवर देश सुहाँमणउ, जइ जावउ पहियाह।
मारू तणा सँदेसड़ा, ढोलइनूँ कहियाह।। 110

- **भाव-**

नरवर देश सुहावना है। हे पथिकों, यदि तुम वहाँ जाओ तो मारवणी के सँदेस ढोला को कहना।

मारवणी का संदेश - 111

संदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ।

ज्यूँ धणि आखइ नयण भरि, ज्यँउ जइआखइ सोइ।।

- **भाव-**
- संदेसों से ही मन की दशा जानी जा सकती है, यदि कोई कहना जाने—जिस प्रकार प्रेयसी आँसुओं से आँखें भरकर कहती है उसी प्रकार यदि वह कहे।

मारवणी का संदेश – 112

ढाढी, एक सँदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ।

सा धण बळि कुइला भई, भसम ढँढोलिसि आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, जाकर प्रियतम से एक सँदेसा कहना- तुम्हारी वह प्रेयसी जलकर कोयला हो गई है, तुम आकर उसकी भस्म को ढूँढना।

मारवणी का संदेश – 113

ढाढी, जे प्रियतम मिलइ, यूँ कहि दाखवियाह।
पंजर नहिं छइ प्रांणियउ, थाँ दिस झळ रहियाह।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, यदि प्रियतम मिले तो इस प्रकार कहना— उसके पंजर में प्राण नहीं है, केवल उसकी लौ तुम्हारी ओर जल रही है।

मारवणी का संदेश - 114

पंथि, एक संदेसड़उ, भल माणस नइ भख्ख।
आतम तुम पाइस अछइ, ओळग रूड़ा रख्ख।।

- **भाव-**
- हे पथिक, एक सँदेसा उस भलेमानुस को कहो- उसकी आत्मा तुम्हारे पास है उसके शरीर को चाहे तुम दूर भले ही रखो।

मारवणी का संदेश - 115

ढाढी, जे राज्यँद मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।

जोबण हस्ती मद चढ्यउ, अंकुस लइ घरि आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, यदि राजन मिलें तो जाकर यों कहना- यौवनरूपी हाथी मदोन्मत्त हो गया है, तुम अंकुश लेकर आओ।

मारवणी का संदेश - 116

ढाढी जे साहिब मिलइ, यू दाखविया जाइ।
आँख्याँ सीप विकासियाँ, स्वाति ज बरसउ आइ।।

भाव-

हे ढाढी, यदि स्वामी मिलें तो जाकर यों कहना—आँख रूपी सीपियाँ विकसित हुई है (तुम्हारी प्रतीक्षा में खुल रही हैं), हे स्वाति, तुम आकर बरसो।

मारवणी का संदेश - 117

- **ढाढी, एक सँदेसड़उ, कहि ढोला समझाइ।**

जोबण आँबउ फलि रह्यउ, साख न खाअउ आइ।।

- **भाव-**
- हे ढाढी, एक सँदेसा ढोला को समझाकर कहना- यौवनरूपी आम्र फल रहा है, आकर उसकी फसल क्यों नहीं खाते ?